रंगमंच : अर्थ एवं परिभाषा

'रंगमंच' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है-'रंग' और 'मंच'। 'रंग' से अभिप्राय सौन्दर्य प्रसाधनों, रंगीन प्रकाश व्यवस्था, रंग-बिरंगे पर्दों अथवा पोशाकों से नहीं अपितु 'रंग' जीवन की उन विविध स्थितियों अवस्थाओं से संबंधित है जिन्हें नाटक के माध्यम से हम मंच पर घटित होते देखते हैं। 'मंच' से अभिप्राय स्थान विशेष से है जहाँ अभिनय किया जाता है। डॉ. अज्ञात का कथन इस बात की पुष्टि करता है कि "मंच एक अर्वाचीन शब्द है जिसका अर्थ है वह मण्डप या कार्य स्थल जहाँ कोई प्रयोग अथवा नाट्याभिनय किया जाये।" भरतमुनि ने 'रंगमंच' शब्द की जगह 'रंगपीठ' और 'रंगशीर्ष' शब्दों का प्रयोग किया है।

हिन्दी में 'रंगमंच' शब्द का प्रयोग व्यापक और सीमित दोनों अर्थों में किया जाता रहा है। रंगमंच के बाह्य एवं आंतरिक पक्षों को अंग्रेजी में क्रमशः 'स्टेज' और 'थियेटर' के रूप में जाना जाता है। स्टेज प्रायः रंगशाला के लिए प्रयुक्त होता है जिसके अन्तर्गत दृश्यबंध, प्रकाश योजना, अभिनेता, रंगशाला, यवनिका आदि पक्षों को लिया जा सकता है। वस्तुतः यह रंगमंच का स्थूल अर्थ है। डॉ. चातक के अनुसार "थियेटर के अन्तर्गत नाट्यकृति और समस्त रंगकार्य, उसकी रूढ़ियाँ और प्रदर्शन में निहित शिल्प, भावबोध और सर्जनात्मक धरातल भी उसी में सम्मिलित है।" इस प्रकार रंगमंच का अर्थ स्थल विशेष न उस कलात्मक विधा से है जो जीवन की अनुभूतियों को सूक्ष्मता और गहराई के साथ गतिशील कार्यव्यापार के रूप में दर्शक समाज के सम्मुख प्रस्तुत करती है।

'हिन्दी साहित्य कोश' में रंगमंच की परिभाषा इस प्रकार दी गई है "वह मंच जिस पर प्रेक्षकों के सम्मुख नाटक का अभिनय प्रदर्शित किया जाता है। अब इससे प्रेक्षागृह तथा नाटक दोनों का ही बोध होता है।" रंगमंच की व्याख्या करते हुए "हिन्दी साहित्य कोश' में आगे लिखा है "आधुनिक रंगमंच के मुख्य 4 भाग होते हैं 1. नेपथ्य, 2. पार्श्व या

Scanned by CamScanner

पक्ष, 3. दृश्य सामग्री अर्थात् दृश्य नियोजन में प्रयुक्त वे वस्तुएँ जो आसानी से मंच पर से हटायी या उस पर रखी जा सकें जैसे मेज, कुर्सियाँ, कृत्रिम वृक्ष पर्वत आदि और 4. मंच का अग्रभाग जो प्रेक्षकों को मंच से पृथक करता है।" वस्तुतः यह व्याख्या मंच अर्थात् अभिनय स्थल की रूपरेखा तथा संरचनात्मकता की ओर संकेत करती है।

'हिन्दी साहित्य कोश' से मिलती-जुलती एक और परिभाषा 'द न्यू मार्डन एनसाइक्लोपीडिया' में मिलती है। उनके अनुसार "रंगमंच से अभिप्राय उस इमारत से अथवा रंगशाला से है जहाँ नाटकीय प्रदर्शन की उत्पत्ति या प्रॉडक्शन संभव है। पिछले तीस वर्षों में इसमें अनेक परिवर्तन और नूतन प्रयास एवं प्रयोग देखने में आए हैं जिनमें रंगदीपन, चक्रित मंच और स्लाइड्स आदि प्रमुख हैं।"

वस्तुतः रंगमंच का यह परिभाषित रूप तकनीकी दृष्टिकोण पर केन्द्रित है। रंगमंच की विशद परिभाषा 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' में मिलती है "थियेटर व्यवहार और सिद्धान्त रूप से वह नाटकीय कला है जिसका वैयक्तिक स्वरूप 'भारतीय रंगमंच', 'मध्ययुगीन रंगमंच' आदि विशेष शैली में निहित है।" इस प्रकार 'ब्रिटेनिका' रंगमंच को एक सामूहिक कला मानते हुए सामाजिक सम्बन्धों और रंगमंच को अन्योन्याश्रित मानता है।

हिन्दी नाट्य-साहित्य में यद्यपि रंगमंच की कोई परिभाषा सर्वमान्य नहीं हो पाई है तथापि कई नाट्य लेखकों और समीक्षकों ने रंगमंच को परिभाषित किया है। लक्ष्मीनारायण लाल का मानना है कि भारतवर्ष में अभी तक नाटक का अध्ययन काव्य तथा साहित्य के स्तर पर ही होता है इसलिए रंगमंच की परिभाषा भी सामने नहीं आ पाती है। उनके अनुसार "रंगमंच एक अनुभूति है, इसे हम रंगमंच का आन्तरिक पक्ष कह सकते हैं। पर जीवन में इसकी विराटता और समग्रता को देखना और उसके विभिन्न तत्वों को सही अर्थों तक उसके ही अनुपात में समझना रंगमंच की अनुभूति का व्यावहारिक पक्ष है।"

नेमिचन्द्र जैन के अनुसार "नाट्य कला सर्जनात्मक अभिव्यक्ति का वह रूप है जिसमें मुख्यतः किसी संवाद मूलक आलेख या कथा को (जिसे हम नाटक कहते हैं) अभिनेताओं द्वारा अन्य रंगशिल्पियों की

Scanned by CamScanner

वस्तुतः पहले रंगमंच और नाटक जैसे अलग-अलग शब्द प्रयुक्त नहीं होते थे तब इनके लिए एक ही शब्द था 'दृश्य काव्य'। दृश्य काव्य कहकर नाटक और रंगमंच की एकत्र स्थिति स्वीकार की गई थी। रंगमंच और नाटक कहकर हमने उसे अलग कर दिया है। प्रसाद जी ने कहा कि नाटक के अनुसार रंगमंच बनना चाहिए अर्थात् उन्होंने रंगमंच और नाटक की भिन्न सत्ता स्वीकार की। दूसरी ओर रंगमंच को नाटक का अनिवार्य तत्व स्वीकार कर यह भी कहा गया कि जो खेला न जा सके वह नाटक ही नहीं है खेलने को तो हर नाटक जैसे-तैसे खेल ही लिया जा सकता है पर वह खेलना सार्थक हो और देखने वालों को यह महसूस हो कि हमने कुछ देखा और कुछ समझा और नाटक का अर्थ देखने के क्रम में मंच से दर्शक तक संप्रेषित हुआ। अगर यह काम पूरा नहीं होता तो कहा जा सकता है कि खेले जाने के बावजूद वह नाटक नहीं है। इसकी जगह पर ऐसा कहना कि जो खेला नहीं जा सके वह नाटक नहीं, नाटक और रंगमंच विषयक अवधारणा पर प्रश्नचिह्न लगा देता है। रीता रानी पालीवाल के अनुसार "रंगमंच की आत्मा है नाट्य ओर उसकी मूल प्रकृति है अभिनयात्मकता इसीलिए भी नाटक और रंगमंच पर्याय है।"

कहा जा सकता है कि नाट्य रचना का दृश्यत्व ही रंगमंच है। इसी दृश्यत्व के जरिये नाटक आलेख के भीतर से बाहर आता है और सामाजिकों को दिखता है। निशान्तकेतु के अनुसार नाटक की कसौटी रंगमंच है और रंगमंच का मूल्यांकन प्रेक्षागृह में होता है। इससे एक बात तो यह स्पष्ट हो जाती है कि आधुनिक रंगचिन्तक रंगमंच को प्रेक्षागृह अथवा रंगशाला का पर्याय नहीं मानते।

पवनकुमार मिश्र का मानना है रंगमंच शब्द का प्रयोग आजकल बड़े व्यापक रूप में किया जाता है वह केवल अभिनय मंच का ही वाचक नहीं है। उसमें नाटक और अभिनेयता से सम्बद्ध सभी वस्तुओं का समावेश हो जाता है-दर्शकों के बैठने की व्यवस्था, अभिनेताओं की वेशभूषा, रंगमंच का शिल्प, नेपथ्य, सज्जा गृह, पर्दा, संगीत, दृश्य,

Scanned by CamScanner

विधान, वातावरण चित्रण/यह व्यापक अर्थ है और संकुचित अर्थ है–अभिनय मंच।

रंगमंच ने भी अन्य साहित्य विद्याओं की भाँति अपनी विकास यात्रा में कई विशेषणों को अर्जित किया है जैसे यथार्थवादी रंगमंच, प्रतीकवादी रंगमंच, स्वच्छंदतावादी रंगमंच, विसंगतिवादी रंगमंच आदि। इन वादों से नाटक और रंगमंच दोनों समृद्ध हुए हैं।

Scanned by CamScanner